Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वट सावित्री व्रतीकथा ॥

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सावित्री-सत्यवान की कथा ॥

महाभारत के वनपर्व में वर्णित सावित्री और सत्यवान की कथा का सरल हिंदी रूपांतरण। लोककथाओं में वरदानों की संख्या और विवरण अलग सुनाए जा सकते हैं।

प्राचीन समय में अश्वपति नाम के राजा की पुत्री सावित्री थी। वह तेजस्वी, विचारशील और दृढ़ निश्चयी थी। विवाह के लिए योग्य वर देखने निकली तो उसे वन में रहने वाले सत्यवान पसंद आए। सत्यवान के पिता राजा द्युमत्सेन राज्य और दृष्टि खोकर परिवार सहित वन में रहते थे।

देवर्षि नारद ने राजा अश्वपति को बताया कि सत्यवान गुणवान हैं, किंतु उनकी आयु का समय बहुत कम बचा है। पिता चिंतित हुए और सावित्री को फिर विचार करने को कहा। सावित्री ने शांत भाव से उत्तर दिया कि वह अपना निर्णय कर चुकी हैं। बाद में उनका विवाह सत्यवान से हुआ और वे वन में उनके परिवार के साथ रहने लगीं।

समय बीतने लगा। सावित्री ने सास-ससुर की सेवा की और मन ही मन नारद की कही बात याद रखी। जिस दिन सत्यवान के जीवन का निश्चित समय निकट आया, उसके पहले उन्होंने व्रत और प्रार्थना की। उस दिन वे सत्यवान के साथ वन में गईं। सत्यवान लकड़ी काटते समय अस्वस्थ हुए और सावित्री की गोद में सिर रखकर गिर पड़े।

॥ यमराज के साथ सावित्री का संवाद ॥

कथा में आता है कि उस समय यमराज सत्यवान के प्राण लेकर आगे बढ़े। सावित्री उनके पीछे चलीं। यमराज ने उन्हें लौट जाने को कहा, पर सावित्री धर्म, सत्य और करुणा पर विनम्रता से बात करती रहीं। उनके विचार सुनकर यमराज प्रसन्न हुए और सत्यवान के जीवन को छोड़कर अन्य वर माँगने को कहा।

सावित्री ने पहले अपने दृष्टिहीन ससुर द्युमत्सेन की आँखों की रोशनी, फिर उनका खोया राज्य माँगा। आगे उन्होंने अपने पिता अश्वपति के लिए संतानों का वर माँगा। यमराज ने ये वर प्रदान किए और उन्हें वापस जाने को कहा, किंतु सावित्री साथ चलती रहीं।

इसके बाद सावित्री ने अपने और सत्यवान के लिए संतानों का वर माँगा। यमराज ने इसे भी स्वीकार किया। सावित्री ने आदर से उन्हें याद दिलाया कि यह वर सत्यवान के जीवित रहने पर ही पूरा हो सकता है। उनकी बुद्धि, निष्ठा और धर्मयुक्त वचन से प्रसन्न होकर यमराज ने सत्यवान को जीवन लौटा दिया।

परिवार में फिर प्रकाश

सावित्री वन में लौटीं तो सत्यवान उठ बैठे। बाद में द्युमत्सेन को दृष्टि और राज्य प्राप्त होने का समाचार मिला। कथा सुनकर परिवार में आनंद हुआ। यह प्रसंग सावित्री के धैर्य, विवेक, प्रेम और वचन निभाने की शक्ति को याद करता है।

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥

॥ वट सावित्री व्रत का भाव ॥

वट सावित्री के अवसर पर श्रद्धालु सावित्री-सत्यवान की कथा सुनते हैं और बरगद अर्थात वट वृक्ष का पूजन करते हैं। दीर्घायु वट वृक्ष को स्थिरता और आश्रय का प्रतीक माना जाता है। इसकी छाया में परिक्रमा करते हुए परिवार के स्वास्थ्य, सौहार्द और मंगल की कामना की जाती है।

अमावस्या और पूर्णिमा की रीति

अनेक उत्तर भारतीय परिवार ज्येष्ठ अमावस्या को वट सावित्री व्रत रखते हैं। कुछ क्षेत्रों, विशेषकर पश्चिम भारत में, ज्येष्ठ पूर्णिमा पर वट पूर्णिमा का व्रत प्रचलित है। दोनों अवसरों से सावित्री-सत्यवान की कथा जुड़ी है; अपने क्षेत्र का पंचांग और पारिवारिक रीति देखें।

कथा का संदेश

सावित्री केवल प्रतीक्षा नहीं करतीं; वे परिस्थिति को समझती हैं, यमराज से विचारपूर्वक संवाद करती हैं और परिवार के अन्य लोगों के लिए भी वर माँगती हैं। कथा में उनका साहस, ज्ञान, संवेदना और अपने निर्णय के प्रति निष्ठा दिखाई देती है।

कथा का धार्मिक फल आस्था का विषय है। स्वास्थ्य या आयु की निश्चित गारंटी मानने के बजाय परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल और एक-दूसरे के सम्मान को भी महत्व दें।

॥ सबका जीवन मंगलमय हो ॥